Thesis Title: नरेंद्र कोहली रचित तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता
Narendra Kohli Rachit Todo Kara Todo : Jiwan Darshan Aur Uski Samkalin Prasangikta

Name of the Candidate: किरीट देबनाथ / KIRIT DEBNATH

Registration Number: R-17RS01171118

Date of Registration: 13th March, 2019

Department: Department of Hindi

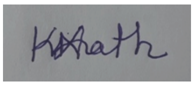

किरीट देबनाथ
शोधार्थी

समर्पण

यह सम्पूर्ण शोध-प्रबंध को मैं अपनी माता के श्री चरणों में समर्पित कर रहा हूँ।

घोषणा

मैं किरीट देबनाथ यह घोषणा करता हूँ कि पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध “नरेंद्र कोहली रचित तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता” मौलिक है। इस शोध कार्य में मुझे निर्देशक के रूप में डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता, भारत, का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

इस शोध-प्रबंध में समाहित सभी जानकरियां शैक्षिक नियमों और नैतिक आचरणों के अनुरूप प्राप्त और प्रस्तुत की गयी है।

मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि लागू नियमों और आचरणों के अनुसार मैंने सभी सामग्रियों और परिणामों को सम्यक रूप से उधृत और संदर्भित किया है जो इस शोध-प्रबंध में मौलिक नहीं है।

मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि यह शोध-प्रबंध अंशतः या पूर्ण रूप से किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में इससे पहले प्रस्तुत नहीं किया गया है।

Declaration

I hereby declare that thesis contains original research work carried out by me under the guidance of Dr. Anindya Gangopadhyay, Assistant Professor, Department of Hindi, Presidency University, Kolkata, India as part of the PhD programme.

All the information in this document have been obtained and presented in accordance with academic rules and ethical conduct.

I also declare that, as required by these rules and conduct, I have fully cited reference of all materials and result that are not original to this work.

I also declare that, this work has not been submitted for any degree either in part or in full to any other institute or University before.

KIRIT DEBNATH
Department of Hindi
Registration Number: R-17RS01171118
Presidency University, Kolkata.

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA
Presidency University
Hindoo College (1817-1855), Presidency College (1855-2010)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि किरीट देबनाथ, शोधार्थी, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता ने अपना शोध-प्रबंध "नरेंद्र कोहली रचित तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता" मेरे पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में इस विश्वविद्यालय की पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य का परिणाम है। मेरे संज्ञान में इस अनुसंधान-सामग्री का उपयोग आंशिक या पूर्णरूप से अन्यत्र शोध की उपाधि हेतु नहीं किया गया है।

Certificate

This is to certify that the thesis entitled "नरेंद्र कोहली रचित तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता Narendra Kohli Rachit Todo Kara Todo : Jiwan Darshan Aur Uski Samkalin Prasangikta" submitted by Shri KIRIT DEBNATH, who got his name registered for PhD programme under my supervision (Registration Number R-17RS01171118, 13th March, 2019) and that neither his thesis nor ay part of the thesis has been submitted for any degree/diploma or any other academic award anywhere before.

Head
Dr. Anindya Gangopadhyay
Department of Hindi
Presidency University, Kol-73 .... 05/04/2023 ....

Signature of Supervisor(s) with date and official stamp

Research Supervisor / शोध निर्देशक

Dr. Anindya Gangopadhyay / डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय

Assistant Professor (Hindi Department) / सहायक प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

Presidency University, Kolkata / प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

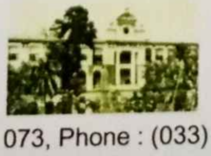

86/1, College Street, Kolkata – 700 073, Phone : (033) 2241 1960, Fax : (033) 2241 2738

भूमिका

भूमिका

किसी भी साहित्य की चाहे बंगला हो, मलयालम हो, असमिया हो, मराठी हो आदि सभी भाषाओं में अन्य विधाओं की भाँति ही उपन्यास साहित्य की एक विधा है। जिस प्रकार से इन भाषाओं में जीवनीपरक उपन्यास हैं उसी प्रकार से हिंदी में भी जीवनीपरक उपन्यास लिखे गए हैं। यह शोध-कार्य हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास पर किया गया है। जिसमें जीवन दर्शन का मूल्यांकन किया गया है। इस शोध-प्रबंध में भारतीय अध्यात्म दर्शन की अवधारणा भी स्पष्ट की गई है।

इस शोध-प्रबंध में कुल छः अध्याय एवं 16 उपअध्याय हैं। प्रथम अध्याय का शीर्षक जीवनीपरक उपन्यास है । इस अध्याय के अंतर्गत कुल तीन उपअध्याय हैं (i) हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास की परम्परा। (ii) हिंदी जीवनीपरक उपन्यास का स्वरुप। (iii) हिंदी जीवनीपरक उपन्यास और अध्यात्म। द्वितीय अध्याय का नाम है नरेंद्र कोहली के उपन्यास। इस अध्याय का विभाजन दो उपध्यायों में किया गया है (i) पौराणिक और आध्यात्मिक प्रसंग।(ii) विविध प्रसंग। तृतीय अध्याय का नाम है भारतीय अध्यात्म व दर्शन परम्परा: एक संक्षिप्त परिचय। यह अध्याय दो उपअध्यायों में बाँटा गया है (i) भारतीय अध्यात्म दर्शन की अवधारणा और उसका स्वरुप एवं (ii) भारतीय दर्शन परम्परा में विवेकानंद का चिंतन । चतुर्थ अध्याय का नाम 'तोड़ो कारा तोड़ो' : अंतर्वस्तु है । इस अध्याय के अंतर्गत चार उपध्याय हैं (i) आध्यात्मिकता और साधना पक्ष। (ii) समकाल का परिप्रेक्ष्य। (iii) स्वामी विवेकानंद का व्यक्तित्वांतरण और (iv) जीवन दर्शन, समाज व संस्कृति। पंचम अध्याय है 'तोड़ो कारा तोड़ो'- शिल्प-विधान । इस अध्याय का विभाजन दो उपअध्यायों में किया गया है जो इस प्रकार हैं (i) जीवनीपरक उपन्यास की शैली तथा (ii)'तोड़ो कारा तोड़ो' भाव और शिल्प । षष्ठ अध्याय जो इस शोध-प्रबंध का अंतिम अध्याय है उसका नामकरण 'तोड़ो कारा तोड़ो' की प्रासंगिकता किया गया है। इस अध्याय को तीन उपअध्यायों में विभाजित किया गया है (i) व्यक्ति निर्माण : पूर्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य ।

(ii) समाज निर्माण : पूर्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य। (iii) राष्ट्र निर्माण : पूर्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य।

यह शोध हिंदी उपन्यासकार नरेंद्र कोहली द्वारा स्वामी विवेकानंद के जीवन पर छः खण्डों में रचित 'तोड़ो कारा तोड़ो' नामक उपन्यास पर किया गया है जिसका शीर्षक है नरेंद्र कोहली रचित तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता। शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में जो जीवनीपरक उपन्यास पर केंद्रित है उसके जीवनीपरक उपन्यास की परम्परा नामक उपअध्याय में जीवनीपरक उपन्यास की परम्परा के विषय में चर्चा करते हुए यह बताया गया है कि इस परम्परा की शुरुआत आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (1946) उपन्यास से होती है। अगला नाम अमृतलाल नागर का है जिन्होंने सूर एवं तुलसी के जीवन को आधार बनाकर 'मानस का हंस' (1972) एवं 'खंजन नयन' (1981) उपन्यास का सृजन किया। नागरजी के उपरांत रांगेय राघव आते हैं जिनके उपन्यास हैं तुलसीदास के जीवन पर 'रत्ना की बात', बुद्ध के जीवन पर 'यशोधरा जीत गई' आदि। (1954 में प्रकाशित) जीवनीपरक उपन्यास की परम्परा में अगला नाम डॉक्टर कृष्णबिहारी मिश्र का है। ठाकुर श्री रामकृष्ण के जीवन पर आधारित इनका उपन्यास है 'कल्पतरु की उत्सव लीला' (पाँचवाँ संस्करण 2017) इसके पश्चात गिरिराज किशोर का नाम आता है जिन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन को आधार बनाकर 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास लिखा। (2011 में इसका प्रथम संस्करण निकला) इस परम्परा में अगला नाम वीरेंद्रकुमार जैन का है। इनका उपन्यास है 'अनुत्तर योगी' (2009) यह वर्धमान महावीर के जीवन पर चार खण्डों में रचित है। शोध में लेखकों के जन्म के आधार पर जीवनीपरक उपन्यासों के क्रम को रखा गया है। प्रथम अध्याय के द्वितीय उपअध्याय में हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप के विषय में चर्चा करते हुए बताया गया है कि हिंदी के जीवनीपरक उपन्यासों को ऐतिहासिक और आध्यामिक आदि दो वर्गों में बाँटा गया है तथा 'पहला गिरमिटिया', 'कल्पतरु की उत्सव लीला' एवं 'भारती का सपूत' उपन्यासों का मूल्यांकन किया गया है।

तृतीय उपअध्याय में जीवनीपरक उपन्यास में ईश्वर के स्वरूप के विषय में बताया गया है। उपन्यास के पात्रों ने जिस रूप में ईश्वर का साक्षात्कार किया ईश्वर के उसी रूप का वर्णन उपन्यासकारों ने अपने-अपने उपन्यासों में किया है। अतः एक ओर जहाँ डॉक्टर कृष्णबिहारी मिश्र द्वारा रचित 'कल्पतरु की उत्सव लीला' में ईश्वर का स्वरूप माँ का है क्योंकि उपन्यास के पात्र ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के लिए उनकी माँ काली ही सब कुछ हैं। वहीं दूसरी ओर अमृतलाल नागर के 'खंजन नयन' उपन्यास में ईश्वर का स्वरूप 'सखा' के रूप में है। 'मानस का हंस' में ईश्वर का स्वरूप दीनबंधु के रूप में है। रांगेय राघव द्वारा लिखित 'रत्ना की बात' उपन्यास में ईश्वर का स्वरूप दीनबंधु के रूप में है। कबीर के जीवन पर आधारित 'लोई का ताना' में ईश्वर का स्वरूप निर्गुण के रूप में है।

द्वितीय अध्याय लेखक नरेंद्र कोहली के उपन्यासों पर केंद्रित है। इस अध्याय में यह बताया गया है कि कोहलीजी किस प्रकार के उपन्यासों का सृजन करते हैं। शोध करते हुए यह ज्ञात हुआ कि नरेंद्र कोहलीजी पौराणिक और आध्यात्मिक एवं विविध विषयों को लेकर उपन्यास लिखते हैं। इस बात का मूल्यांकन पौराणिक और आध्यात्मिक प्रसंग एवं विविध प्रसंग नामक दो उपअध्यायों में किया गया है। जिन उपन्यासों को कोहलीजी ने रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों को लेकर लिखा है उन्हें पौराणिक और आध्यात्मिक प्रसंग के अंतर्गत रखा गया है। जैसे रामकथापरक उपन्यास 'युद्ध भाग' 1, 'युद्ध' भाग 2 (2005) महाभारत की अमर कथा पर आधारित आठ खण्डों में 'महासमर' (2015) । इन सभी उपन्यासों में भले ही कथा रामायण एवं महाभारत की है किंतु कथा हमारे घर की है। शोध के दौरान यह ज्ञात हुआ कि लेखक नरेंद्र कोहली आधुनिक समकालीन समस्याओं का समाधान पौराणिक आख्यानों में तशालते हैं। उनकी मान्यता है कि आज भी किसी भी समस्या का समाधान रामायण, महाभारत, उपनिषदों आदि में मिलता है। उन्होंने पौराणिक आख्यानों को लेकर छोटे-छोटे उपन्यास भी लिखा है। उदाहरण के लिए महाभारत की कथा पर आधारित 'कुंती' (2012) यह महाभारत की पात्र 'कुंती' पर केंद्रित है। ठीक इसी प्रकार इनका 'अहल्या' उपन्यास (2019) रामायण की पात्र 'अहल्या' पर केंद्रित है जबकि 'शिखंडी' (2020) महाभारत का पात्र 'शिखंडी' पर आधारित है। यह

कहना सही होगा कि उन्होंने पौराणिकता को एक व्यापक आकार में फैलाने का प्रयास किया। नरेंद्र कोहली के पौराणिक प्रसंग पर आधारित बड़े और छोटे दोनों को मिलाकर 19 उपन्यासों का मूल्यांकन किया गया है। विविध प्रसंग के अंतर्गत उन उपन्यासों का मूल्यांकन किया गया है जिन्हें लेखक ने विविध आधुनिक विषयों को लेकर लिखा है। इसके अंतर्गत पाँच उपन्यासों का मूल्यांकन किया गया है। 'पुनरारम्भ' (1994)→ इस उपन्यास में यह बताया गया है कि पराधीन भारत में अपने परिवार के लोगों को छोड़कर पहाड़ी वन्य प्रदेशों में रहना अत्यंत चुनौतीपूर्ण था। 'क्षमा करना जीजी' (1995)→ यह लेखक का एक पारिवारिक और सामाजिक उपन्यास है। 'प्रीति-कथा' (2005)→ यह एक प्रेम-कथापरक उपन्यास है। 'वरूणपुत्री' (2017)→ पुराण, इतिहास एवं समकालीन घटनाओं का वर्णन है। 'सागर-मंथन' (2018) → यह आधुनिक बोध से जुड़ा हुआ उपन्यास है। शीर्षक से भले ही यह पौराणिक प्रतीत होता है लेकिन यह पौराणिक नहीं है।

अतः यह कहा जा सकता है कि नरेंद्र कोहली को केवल पौराणिक रचनाकार नहीं हैं बल्कि वे विविध विषयी रचनाकार हैं।

तृतीय अध्याय भारतीय अध्यात्म दर्शन परम्परा से सम्बंधित है। इसे दो उपअध्यायों में बाँटा गया है। भारतीय अध्यात्म दर्शन की अवधारणा और उसका स्वरूप एवं भारतीय दर्शन परम्परा में विवेकानंद का चिंतन। प्रथम उपअध्याय के अंतर्गत भारतीय अध्यात्म दर्शन की अवधारणा एवं उसके स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। दर्शन के विषय में लेखक नरेंद्र कोहली की विचारधारा को भी स्पष्ट किया गया है। भारतीय दर्शन के विषय में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन, मृणालकांति गंगोपाध्याय आदि विद्वानों के विचारों को भी स्पष्ट किया गया है। वैदिक काल, महाकाव्य काल आदि के विषय में चर्चा की गई है एवं विविध भारतीय दर्शनों जैसे जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन आदि का मूल्यांकन किया गया है। भारतीय दर्शन परम्परा में विवेकानंद का चिंतन वाले उपअध्याय के अंतर्गत स्वामीजी के दार्शनिक चिंतन के विभिन्न बिंदुओं जैसे सार्वोभौमिकता, अद्वैतवाद आदि का मूल्यांकन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास पर केंद्रित है। इसके प्रथम उपअध्याय में स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिकता और साधनात्मकता पर विचार किया गया है। द्वितीय उपअध्याय में विभिन्न बिंदुओं में समकालीन परिप्रेक्ष्य की चर्चा की गई है। जैसे सच्चे दानी का अभाव', 'भक्त बनने का दिखावा' आदि। तृतीय उपअध्याय में स्वामी विवेकानंद के बहुआयामी व्यक्तित्व के विकास के विषय में चर्चा की गई है । जैसे ऐतिहासिक, अभिनेता आदि । चतुर्थ उपअध्याय में जीवन दर्शन, समाज और संस्कृति के विषय में चर्चा की गई है।

पंचम अध्याय तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास के शिल्प-विधान पर केंद्रित है। इसके प्रथम उपअध्याय में जीवनीपरक उपन्यास की शैली का मूल्यांकन किया गया है एवं द्वितीय उपअध्याय में तोड़ो कारा उपन्यास के मूल भाव पर विचार किया गया है। अर्थात् इस उपअध्याय के माध्यम से यह ज्ञात हो जाएगा कि कोहलीजी ने विवेकानंद के जीवन पर छः खण्डों में लिखित अपने इस तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास के माध्यम से अपने पाठकों को क्या संदेश दिया है इसके साथ ही तोड़ो कारा उपन्यास में प्रयुक्त शिल्प पर भी प्रकाश डाला गया है।

षष्ठ अध्याय में 'तोड़ो कारा तोड़ो' उपन्यास की समकालीन प्रासंगिकता का व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया गया है तथा इनके पूर्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर भी प्रकाश डाला गया है।

इस शोधकार्य को सम्पन्न करने में मेरे शोध निर्देशक प्रो० डॉक्टर अनिद्य गंगोपाध्याय, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता का समय-समय पर सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः मैं उनके प्रति अत्यंत कृतज्ञ हूँ। उनके सहयोग के बिना तो यह शोध पूर्ण ही न हो पाता। प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता के हिंदी विभाग के अन्य प्राध्यापकों प्रो० ऋषि भूषण चौबे महोदय, प्रो० वेदरमण पांडेय महोदय तथा प्राध्यापिका प्रो० तनुजा मजूमदार महोदया, प्रो० मुन्नी गुप्ता महोदया एवं प्रेसीडेंसी के हिंदी विभाग की पूर्व प्राध्यापिका प्रो०मेरी हाँसदा महोदया के प्रति आभारी हूँ क्योंकि मुझे इनका भी सहयोग प्राप्त हुआ। प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय के बंगला विभाग के प्राध्यापक प्रो० शाओन नंदी महोदय एवं इतिहास विभाग के प्राध्यापक प्रो० नवरोज़ अफ़रीदी महोदय के प्रति

भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने रैक के सदस्यों के रूप में पधारकर मेरा शोध किस प्रकार बेहतर हो सकता है इसके लिए अपना मूल्यवान सुझाव प्रदान किया। मेरी शोध-पूर्व प्रस्तुति के समय बाह्य विशेषज्ञ के रूप में पधारीं कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो० राजश्री शुक्ला महोदया एवं बर्धमान विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्राध्यापिका प्रो० रूपा गुप्ता महोदया एवं विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित रहे अपने विभाग के सभी प्राध्यापकों द्वारा शोध को बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए मुझे मूल्यवान सुझाव देने हेतु मैं कृतज्ञ हूँ। प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की प्राध्यापिका प्रो० मृदु राय महोदया को भी मेरी शोध-पूर्व प्रस्तुति के अवसर पर उपस्थित रहने हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इस शोध कार्य को सम्पन्न करने हेतु मैं अपने शोध निर्देशक के सुझाव के आधार पर गोलपार्क रामकृष्ण मिशन लाइब्रेरी भी समय-समय पर जाता रहा हूँ। मैं इसके लिए महोदय के निर्देश पर कोलकाता के बागबाजार उद्बोधन कार्यालय भी गया हूँ। अतः इस सहयोग के लिए मैं गोलपार्क के पुस्तकालय, उद्बोधन कार्यालय एवं अपने शोध निर्देशक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। प्रेसीडेंसी कॉलेज के पूर्व प्राध्यापकों प्रो० अभिजीत भट्टाचार्या महोदय प्रो० संध्या कुमारी सिंह महोदया, प्रो० रंजना शर्मा महोदया, प्रो० हिमांशु कुमार महोदय, प्रो०जयंत कुमार साहू महोदय के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। यह शोध-प्रबंध उनके भी स्नेह एवं आशीर्वाद का परिणाम है। अपने विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के शोधार्थी मित्रों नेहा चतुर्वेदी, मधुमिता ओझा, निधि कुमारी गुप्ता, मनमुन अग्रवाल, कार्तिक कुमार राय, ब्रजेश प्रसाद, प्रियंका कुमारी सिंह, आराधना साव,श्रद्धा सिंह, पूजा मिश्रा, पूजा प्रसाद जयप्रकाश मिश्र, निधि पांडेय, शनि कुमार चौहान, रानी कुमारी तांती, पायल मान्ना, कालू तमांग आदि के प्रति भी आभारी हूँ। मैं केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अपने शोधार्थी मित्रों पी० विनोद, अनघा ए०एस०, विद्याराज, बिंसी बालाचंद्रन, अंजिता जे० एम०, हरिता कुमारी जे, सुनामी एल० विजयन एवं वहाँ के प्राध्यापकों एवं प्राध्यापिकाओं प्रो० आर जयचंद्रन महोदय, प्रो० लिना बी०एल० महोदया, प्रो० एस०आर जयश्री महोदया, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, प्रो० पी जे० हरमन महोदय, प्रो० इन्दु के० वी० महोदया, प्रो० श्रीनिता पी०आर० महोदया एवं अन्य सभी के प्रति भी मैं हृदय से आभारी हूँ इन

सभी के सहयोग से केरल विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की विभिन्न संगोष्ठियों में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ। साथ ही सरकारी महिला विद्यालय, तिरुवंतपुरम के हिंदी विभाग की प्राध्यापिका प्रो० डॉक्टर शाबाना हबीब तथा डॉक्टर बिंदु वेल्सर महोदया अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सरकारी महिला महाविद्यालय, तिरुवनंतपुरम, केरल के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। इनके सहयोग से विभाग की विभिन्न संगोष्ठियों में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ।

मैं लेखक नरेंद्र कोहलीजी के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपने मूल्यवान समय में से कुछ समय निकालकर मुझे साक्षात्कार लेने का अवसर दिया। इस शोध-प्रबंध के अंत में 15 नवम्बर 2020, रविवार को साक्षात्कार के दौरान मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नो और उनके द्वारा दिए गए उत्तरों का पूर्ण विवरण दिया गया है।

मैं प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के कार्यालय में कार्यरत सभी के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपनी माता श्रीमती बासना नाथ, पिता श्री कृष्ण गोपाल नाथ एवं अपने अनुज किरणमणि देबनाथ के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। अपने परिवार में सभी ने मुझे समय-समय पर आवश्यक सुझाव दिए हैं। मैं अपने दिवंगत पितामह राजधन नाथ एवं दिवंगता सुरधनी देवी तथा अपनी मातामही दिवंगता सुभासिनी देवी एवं दिवंगत मनि देबनाथ तथा अपने मातृ-कुल एवं पितृ-कुल के सभी सम्बन्धियों के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ क्योंकि मेरा यह शोध-प्रबंध उनके आशीर्वादों और स्नेह का परिणाम है।

शोध-प्रबंध का सार

जीवनीपरक उपन्यास साहित्य की एक विधा है। यह शोध हिंदी के उपन्यासकार नरेंद्र कोहली के द्वारा स्वामी विवेकानंद के जीवन पर छः खंडों में लिखित तोड़ो कारा तोड़ो नामक जीवनीपरक उपन्यास पर किया गया है। शोध का शीर्षक है "नरेंद्र कोहली रचित तोड़ो कारा तोड़ो : जीवन दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता"। इस शोध-प्रबंध में हिंदी जीवनीपरक उपन्यास की परम्परा के विषय में चर्चा की गई है। जीवनीपरक उपन्यासों के क्रम को रचनाकारों के जन्म के आधार पर रखा गया है। उपन्यास के स्वरूप को ऐतिहासिक और आध्यात्मिक दो रूपों में बाँटा गया है। जब कोई जीवनीपरक उपन्यास किसी आध्यात्मिक व्यक्ति के जीवन को आधार बनाकर लिखा जाता है तब उसे आध्यात्मिक जीवनीपरक उपन्यास कहा जाता है। जैसे डॉक्टर कृष्णबिहारी मिश्र का ठाकुर श्री रामकृष्ण के जीवन पर आधारित 'कल्पतरु की उत्सव लीला' एक आध्यात्मिक जीवनीपरक उपन्यास है। वैसे ही जब किसी ऐतिहासिक पात्र के जीवन को आधार बनाकर कोई उपन्यास लिखा जाता है तब उसे ऐतिहासिक जीवनीपरक उपन्यास कहा जाता है। जैसे गिरिराज किशोर द्वारा लिखित गाँधीजी के जीवन पर आधारित 'पहला गिरमिटिया'।आध्यात्मिक पुरुष जिस प्रकार से ईश्वर के स्वरूप का चिंतन करता है उपन्यासों में ईश्वर का वही स्वरूप उभरकर आता है। अतः एक ओर जहाँ 'कल्पतरु की उत्सव लीला' उपन्यास में ईश्वर का रूप माँ का है क्योंकि उपन्यास के पात्र ने माँ के रूप में ईश्वर का साक्षात्कार किया था जबकि 'खंजन नयन' में ईश्वर सखा के रूप हैं। नरेंद्र कोहली के उपन्यासों का परिचय देते हुए यह बताया गया है कि कोहलीजी के उपन्यासों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है पौराणिक और आध्यात्मिक प्रसंग तथा विविध प्रसंग। पौराणिक और आध्यात्मिक प्रसंग के अंतर्गत लेखक के उन उपन्यासों के विषय में चर्चा की गई है जिन्हें उन्होंने रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों को आधार बनाकर लिखा है। इसके अंतर्गत बड़े और छोटे दोनों को मिलाकर 19 उपन्यासों का मूल्यांकन किया गया है तथा विविध प्रसंग के अंतर्गत उन उपन्यासों का मूल्यांकन किया गया है जिन्हें उन्होंने विविध आधुनिक विषयों को आधार बनाकर लिखा है। इसके अंतर्गत पाँच उपन्यासों के विषय में चर्चा की गई है। भारतीय अध्यात्म दर्शन परम्परा का परिचय देते हुए भारतीय अध्यात्म

दर्शन की अवधारणा एवं स्वरूप के अंतर्गत विविध भारतीय दर्शन जैसे बौद्ध दर्शन, जैन-दर्शन आदि का मूल्यांकन किया गया है। लेखक नरेंद्र कोहली के दार्शनिक विचार को स्पष्ट किया गया है। भारतीय दर्शन परम्परा में विवेकानंद का चिंतन अद्वैतवाद है। तोड़ो कारा उपन्यास में निहित स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिकता एवं साधनात्मकता पर विचार किया गया है। इसके समकालीन परिप्रेक्ष्य में यह बताया गया है कि आज के ज़माने में लोग बहुत दिखावा करते हैं कि वे बड़े भक्त हैं, साधु हैं परंतु वास्तविकता कुछ और ही है। इसमें यह बताया गया है कि अंग्रेज़ों के ज़माने में भारत के लोग अंग्रेज़ी के कितने अधिक दीवाने थे। आज भी यही स्थिति बनी हुई है। स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्वंतरण पर चर्चा करते हुए यह बताया गया है कि स्वामी विवेकानंद के विविध व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार हुआ। जीवन दर्शन, समाज और संस्कृति के अंतर्गत बताया गया है कि भारतीय चिंतन में दर्शन केवल ज्ञान के प्रति अनुराग ही नहीं है बल्कि मानव जीवन को समग्रता से देखना भी है। जीवनीपरक उपन्यासों में कई प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया जाता है जैसे वर्णात्मक शैली, संवादतमक शैली आदि। तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास के मूल भाव के विषय में चर्चा करते हुए उसके शिल्प पर भी प्रकाश डाला गया है। अंत में तोड़ो कारा तोड़ो उपन्यास की समकालीन प्रासंगिकता का व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया गया है तथा इनके पूर्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर भी प्रकाश डाला गया है। शोध करते हुए जो नई उपलब्धियाँ उभरकर आईं उनका भी उल्लेख किया गया है।

List of Published research papers and Patents out of the research work

शोध आलेख (प्रकाशित) / Published Research Articles			
क्रम	लेख का शीर्षक / Title	पत्रिका	अंक / पृष्ठ / लिंक
1.	शरणम : भय और मोह	अक्षरा UGC Approved Care Listed National Journal ISSN No. : 2456-7167	197, अगस्त 2021/53
2.	भक्ति क्या है ?	साहित्य अमृत UGC Approved Care Listed National Journal ISSN No. : 2455-1171	मई-जून-जुलाई 2021 (संयुक्तांक)/124
3.	स्वामी विवेकानंद का ऐतिहासिक दृष्टिकोण	राजभाषा भारती भारत सरकार, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग ISSN No. : 0970-9398	160, सितम्बर 2021/96
4.	स्वामी विवेकानंद का शिक्षा सम्बंधित दृष्टिकोण	अनहद A peer reviewed Punjabi Research National Journal ISSN No. : 2516-9009	साल 4, अंक 1, January-March, 2021/118
5.	नरेंद्र कोहली का रचना संसार : सागर मंथन में सांस्कृतिक चिंता	मुक्तांचल A peer reviewed Journal ISSN No. : 2350-1065	जनवरी-मार्च, 2020

List of Published research papers and Patents other than research work

शोध आलेख (प्रकाशित) / Published Research Articles			
क्रम	लेख का शीर्षक / Title	पत्रिका	अंक / पृष्ठ / लिंक
1.	भारतीय संस्कृति में माँ का स्वरूप	शोध संचार बुलेटिन, UGC Approved Care Listed International Multidiciplinary Quarterly Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal ISSN No. : 2229-3620	Issue 41, Vol. 11 January to March 2021/176
2.	मिराबाई का योगदान	Bohal Shodh Manjusha, An International Peer Reviewed, Refereed, Multidiciplinary & Multiple Languages Research Journal ISSN No. : 2395-7115	Issue 15, Vol. 3(2)/120
3.	भारत का अभ्युदय	Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal ISSN No. : 2581-6306	Issue 5, September-October-2020/21

National Level Training-cum-Workshop			
क्रम	विषय/Topic	संस्थान-संस्था / Institution	तिथि-वर्ष / Date-year
1.	One Week, Training-cum-Workshop on Testing & Evaluation and Question Item Writing in Hindi हिंदी भाषा में परीक्षण एवं मूल्यांकन तथा प्रश्न-पद लेखन विषयक एक सप्ताह की प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला	National Testing Service-India, Central Institute of Indian Languages, Ministry of HRD, Dept. of Higher Education, Govt. of India, Manasagangotri, Mysuru	21st to 25th May, 2018

शोध विषय सम्बंधित सेमिनार, वेबिनार / Related to subject			
क्रम	लेख का शीर्षक / Title	संस्थान-संस्था / Institution	तिथि-वर्ष / Date-year
1.	Departmental Seminar – Rahul Sanskrityayan Research Symposium नरेंद्र कोहली का रचना संसार:सागर मंथन में सांस्कृतिक चिंता (7th Symposium) (Paper presentation)	Presidency University, Kolkata	7th August 2019 to 2nd August 2022

शोध विषय से अलग सेमिनार, वेबिनार / Apart from subject			
क्रम	लेख का शीर्षक / Title	संस्थान-संस्था / Institution	तिथि-वर्ष / Date-year
1.	Three Day National Webinar लोक जीवन (Paper presentation)	University of Kerala, Kariavattom, Thiruvananthapuram, Kerala	11th to 13th January, 2023
2.	Departmental Seminar – Rahul Sanskrityayan Research Symposium भारत का अभ्युदय (3rd Symposium) (Paper presentation)	Presidency University, Kolkata	7th August 2019 to 2nd August 2022
3.	Departmental Webinar, Agra कबीर का समाज दर्शन (Paper presentation)	कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा	30th July, 2022
4.	एक दिवसीय कार्यशाला पुस्तक समीक्षा : क्या, क्यों और कैसे ? (Participation)	हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	21st April, 2022
5.	Three Day National Webinar विकलांगता एक शक्ति और चुनौती है – 'विटामिन जिंदगी के संदर्भ में' (Paper presentation)	University of Kerala, Kariavattom, Thiruvananthapuram, Kerala	08 to 10th March, 2021
6.	Two Day International Webinar वृक्ष और पर्यावरण (Paper presentation)	Jai Narayan Vyas University, Jodhpur (Raj.) India	4th to 5th June, 2021

7.	Three Day National Webinar Anuvad Aur Samaj (Paper presentation)	University of Kerala, Kariavattom, Thiruvananthapuram, Kerala	16th to 18th December, 2021
8.	International Webinar महिलायों के पार्श्वीकरण में समाज सुधारकों की भूमिका (Paper presentation)	Centre for Women Studies, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner, Rajasthan	23rd June, 2021
9.	Departmental Webinar – Lecture Series 27 संजीव की पर्यावरण सम्बंधी रचनाएँ (Participation)	Government College For Women, Thiruvananthapuram	13th February, 2021
10.	Departmental Webinar – Lecture Series-24 समकालीन हिंदी कविता और मुक्तिबोध (Participation)	Government College For Government Women, Thiruvananthapuram	10th January, 2021
11.	अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य ई-प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (Participation)	हिंदू कॉलेज, अमृतसर (पंजाब)	27th March, 2021
12.	National Webinar "Drug Abuse In Youth : A Major Social Problem And Solutions" (Participation)	Jai Narain Vyas University, Jodhpur	31st May, 2021
13.	National level E-Quiz on Hindi Language and Literature	Ettumanoorappan College, Kottayam	14th September, 2020

	(Participation, Score-75%)		
14.	दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : सृष्टि एवं दृष्टि (Participation)	राँची विश्वविद्यालय	19th to 20th August, 2020
15.	राष्ट्रीय संगोष्ठी मिथ, फेंटेसी और यथार्थ (Participation)	लिटरेरिया कोलकाता -2019	13th December, 2019
16.	One Day Seminar अलका सरावगी के नए उपन्यास "एक सच्ची-झूठी गाथा" (Paper presentation)	Presidency University, Kolkata	20th March, 2018
17.	National Seminar "Bharatiya Bhashayen : Sanskritik Sanwaad" (Participation)	Central Hindi Directorate and Bharatiya Bhasha Parishad	10th to 11th March, 2018
18.	राष्ट्रीय संगोष्ठी 21वीं सदी में भक्ति साहित्य का परिप्रेक्ष्य (Participation)	श्री शिक्षायतन कॉलेज और भारतीय भाषा परिषद	20th April, 2018